Chapter-7

अध्याय - ७

उपसंहार

उपसंहार :

साहित्य की जो एक सर्वमान्य परिभाषा हमें प्राप्त होती है, वह है- ''सहितस्य भावः साहित्यम्''। अर्थात् साहित्य में 'सहित' का भाव अनुस्यूत होता है। 'सहित' का अर्थ है-'हितेन सः सहितम्'। अर्थात् 'जिसमें हित का भाव हो, कल्याण का भाव हो वह 'सहित' है। इस तरह साहित्य का अर्थ होगा जिसमें भी लाभ होता है, हित होता है, कल्याण होता है वह साहित्य में अन्तर्निहित है। यहाँ हित लाभ या कल्याण जो है वह किसी व्यक्ति का नहीं वैयक्तिक नहीं, अपितु समग्र मानव जाति का है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह हित और कल्याण व्यष्टिगत नहीं वरन् समष्टिगत होता है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि साहित्य से व्यक्तिगत लाभ नहीं होता, साहित्य से व्यक्ति का कल्याण तो होता ही है परंतु यहाँ हमारा उद्देश्य साहित्य के मूल प्रयोजन से है, जिसमें जन 'कल्याण' या 'मानव कल्याण' की भावना ही निहित है। साहित्य से हमारी

चेतना का विस्तार होता है । साहित्य के पठन-पाठन से व्यक्ति में सहृदयता आती है । यहाँ पर कोई तर्क, बल्कि 'कुतर्क' भी कर सकता है कि 'कई साहित्यिक लोग भी बड़े कुटिल और दुष्ट पाये गये हैं । यहाँ हमारी स्थापना यह है कि ऐसे लोगों को हम तथाकथित साहित्यिक कह सकते हैं । वास्तविकता में ये साहित्य के नहीं दूसरे क्षेत्र के लोग होते हैं जो किन्हीं विवशताओं के तहत साहित्य के क्षेत्र में घुसपैठियों की तरह घुस आये हैं । वे साहित्य की बातें तो करते हैं किन्तु मूल साहित्य तत्व से उनका कोई लेना देना नहीं है ।

अभिप्राय यह कि साहित्य का संबंध मानव चेतना के विकास से है । साहित्य का पाठक जिससे राजशेखर भावक या सहृदय कहते हैं । संकुचित विचारों वाला हो ही नहीं सकता क्योंकि उसके सामने तो एक भरा-पुरा संसार पड़ा होता है । अनेक साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से वह एक विस्तृत और व्यापक संसार से जुड़ जाता है । वह उनके सुखों से सुखी और दुःखों से दुःखी होता है । इसे ही हमारे आचार्यों ने 'साधारणीकरण' कहा है । भावक या सहृदय संसार के दूसरे लोगों के साथ, पात्रों के साथ बहना, पसीजना, पिघलना जानता है फलतः साहित्य का हृदय ऋजु आर्द्र एवं कोमल रहता है वह जड़ या जरठ नहीं हो जाता । साहित्य का पाठक प्रेमतत्व से परिचित होता है और जो प्रेम करता है, प्रेमी होता है वह शुष्क, कठोर और अभिमानी नहीं हो सकता । क्योंकि अभिमान के ऊँट पर सवार होकर कोई भी व्यक्ति प्रेम नहीं कर सकता । घनानंद ने बहुत सही कहा है 'अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं'' अर्थात् यह स्नेह का मार्ग, प्रेम का मार्ग बहुत सीधा-सादा है, उसमें तनिक भी होशियारी और वक्रता नहीं चल सकती । प्रेम वही व्यक्ति कर सकता है जो निष्पाप होता है, निःकपट होता है । पापियों और कपटियों का काम यह नहीं है । और व्यक्ति का इस प्रेमतत्व से परिचय कराने वाली कोई वस्तु है तो वह साहित्य है । किन्तु यहाँ प्रेम का व्यापक अर्थ लेना होगा जो विशुद्ध और निःस्वार्थ होता है । मल रहित और वासना रहित होता है ।

साहित्य का संबंध सत्य से है । साहित्य को नहीं समझने वाले बहुत से

लोग यह कहते हुए पाये जाते हैं कि साहित्य का सत्य से कोई वास्ता नहीं होता , वह तो कल्पना का खेल है, काल्पनिक सृष्टि है, किन्तु भला उनको कौन समझायेगा कि कल्पना भी कहीं न कहीं वास्तविकता की जमीन को खोजती है। कल्पना भी निराधार और नितांत वायवी नहीं होती। किन्तु साहित्य में निहित सत्य सरसता से समन्वित होता है । वह शुष्क और निरस या ठोस सत्य नहीं होता। साहित्य का नियम है-''सत्यम् ब्रुयात, प्रियम् ब्रुयात'' अर्थात् सत्य कहो पर प्रिय कहो , सत्य को इस तरह कहा जाय कि वह मानव कल्याणकारी हो जाय और सुंदर भी लगे। दूसरे शब्दों में साहित्य का सत्य 'शिवम्' और 'सुंदरम्' से समन्वित होता है। साहित्य का सत्य शिवम् अर्थात् कल्याणकारी और सुंदर होता है। यही कारण है कि कला मात्र का आदर्श-'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' बताया गया है।

ऊपर कहा गया है कि साहित्य का संबंध व्यापकता से है,संकुचितता से नहीं। परिणामतः साहित्य में अनेक विषयों का समावेश हो जाता है। साहित्य में इतिहास, पुराण, पुरातत्व, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, ज्योतिष, भौतिकी, रसायन, भूगोल, भूःशास्त्र आदि कोई भी विषय समाविष्ट हो सकता है। तभी तो हम लोग कई बार तुलसीदास की बहुज्ञता या बिहारी की बहुज्ञता की बात करते हैं। वस्तुतः साहित्यकार को जितने भी विषयों और शास्त्रों का ज्ञान होता है वह ज्ञान शिवम् और सुन्दरम के ढाँचे में ढलकर सरस साहित्य के रूप में प्रवाहित होता है। साहित्य का दूसरे शास्त्र और विषयों का 'कच्चे माल' (Raw Matirials) के रूप में इस्तेमाल करता है तभी तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकारों के उपन्यासों और निबंधों को पढ़ते हुए हमें दूसरे विषयों का ज्ञान सहज और सरल तरीके से हो जाता है। हमारे यहाँ दूसरे विषयों और शास्त्रों को साहित्य की योनियाँ कहा गया है तभी तो गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं कि जिन्होंने साहित्य और शास्त्र दोनों पढ़े हैं वह परम भाग्यशाली हैं , जिन्होंने केवल साहित्य पढ़ा है उनका भाग्य मध्यम प्रकार का है और जिन्होंने केवल शास्त्र पढ़ा है और साहित्य नहीं पढ़ा है वे तो परम मंद भागी हैं। विश्व में ऐसे

अनेक वैज्ञानिक मिलते हैं जिनकी साहित्य में बड़ी गहरी रुचि पायी गयी है। साहित्य के कारण ऐसे वैज्ञानिकों की दृष्टि मानवतावादी हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य की चेतना बड़ी व्यापक चेतना है और साहित्य में हाथी के पैर के मानिन्द सब कुछ समाहित हो जाता है। इस साहित्य के प्रति शुरू से ही मेरी रुचि रही है। साहित्य के अनेक विभागों में कथा साहित्य भी एक विभाग है। कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी का समावेश होता है। संसार में शायद ही कोई ऐसे मनुष्य मिलेगा जिसकी रुचि कथा में नहीं होगी। शैशव काल से ही हम कथा-वार्ताओं को सुनते आये हैं। किन्तु तब हमारी कथाओं के प्रकार कुछ अलग प्रकार के थे। वयष्क होने पर हमारी कथाओं का प्रकार बदल जाता है। शैशवकाल की कथाओं में कुतुहल और जिज्ञासा का भाव रहता है। 'आगे क्या हुआ ? में ही हमारी रुचि होती है। परन्तु वयस्क होने पर हम कथा में मानव चरित्र के गूढ़ रहस्यों को खोजते हैं। मानव-चरित्रों को पहचानने का हमारा उपक्रम रहता है। परापूर्व काल से मनुष्य की अभिरुचि मनुष्य में ही रही है। और कथा के द्वारा हम मनुष्य को, मनुष्य की विविध छवियों को, मनुष्य चरित्र के गूढ़ रहस्यों को और भी बेहतर तरीके से जानने-समझने लगते हैं। व्यक्ति का अपना अनुभव संसार और उसका व्याप सीमित होता है। परंतु साहित्य के द्वारा हम विशेषतः कथा साहित्य द्वारा हम मनुष्य के विविध वर्ग और तबकों के, विभिन्न काल और विभिन्न स्थान के लोगों को जानने-समझने लगते हैं। जब हम किसी एक लेखक को पढ़ते हैं तो उसका समग्र रचना संसार हमारे सामने समुपस्थित हो जाता है। प्रेमचंद, रेणु, नागार्जुन, शैलेष मटियानी, झवेरचंद मेघाणी, या पन्नालाल पटेल को हम पढ़ते हैं तो उनके रचना संसार से हम रूबरू होते हैं। पात्रों के माध्यम से हम अनेक प्रकार के लोगों के चरित्रों को जानने-समझने लगते हैं। इस तरह भी हमारी चेतना का, हमारी सूझबूझ, हमारी संवेदना का विकास होता है।

आधुनिक काल का एक प्रमुख अभिलक्षण नारी विमर्श का रहा है। नारी विमर्श के कारण नारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ है। फलतः आधुनिक काल

के अन्तर्गत हमें पुरुष लेखकों के साथ-साथ अनेकानेक स्त्री लेखिकाओं का साहित्य भी उपलब्ध होता है। यद्यपि प्राचीनकाल से साहित्य में महिलाओं का कुछ दखल रहा है। वैदिककाल में कुछ ऋचाएँ हमें तत्कालीन ऋषि-विदुषिओं की मिलती हैं। बाद में भक्तिकाल के अन्तर्गत दयाबाई, सहजोबाई, मीराबाई आदि कवयित्रियों का साहित्य उपलब्ध होता है। रीतिकाल में भी प्रवीण सागर जैसी कुछ विदुषियाँ मिल जाती हैं परंतु आधुनिक काल में और विशेषतः कथा साहित्य में तो लेखिकाओं का योगदान पहले के किसी भी काल के तुलना में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से बढ़ा-चढ़ा हुआ मिलता है। मेरे मार्ग दर्शक महोदय डॉ. पारुकांत देसाई को एक आलोचनात्मक पुस्तक 'आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास' ही इस विषय पर है। आधुनिक काल में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, शिवानी, मृदुला गर्ग, दिप्ती खंडेलवाल, मेहरुनिश्शा परवेज़, निरुपमा सेवती, मालती जोशी, ममता कालिया, राजी सेठ, शशीप्रभा शास्त्री, शीला रोहेकर, गीतांजलीश्री, अलका सरावगी, नाशिरा शर्मा, जया जादवानी, कृष्णा अग्निहोत्री, मंजुलभगत, मैत्री पुष्पा, चित्रा मुदगल आदि अनेकानेक लेखिकाओं का कथा साहित्य हमें उपलब्ध होता है। इन कथा लेकिखकाओं में मन्नू भंडारी का स्थान मेरे नम्रमतानुसार प्रथम श्रेणी में आता है। मन्नू भंडारी का कथा साहित्य परिमाणात्मक दृष्टि से उतना नहीं है जितना उनकी समकालीन कई लेखिकाओं का है। परंतु गुणात्मक दृष्टि से मन्नू जी के कथासाहित्य को हम अग्रिम स्थान दे सकते हैं। कथासाहित्य में जैसाकि ऊपर निर्देश किया जा चुका है कथा साहित्य में मेरी अभिरुचि शुरू से ही रही है। एम. ए.के उपरांत जब शोध अनुसंधान करने का विचार सामने आया मैंने विषय अपनी पसंदगी का कलश मन्नू जी के कथा साहित्य पर उतारा। क्योंकि शोध-अनुसंधान के पूर्व से ही मन्नू जी के कथा साहित्य का मैं कायल रहा हूँ। और उनकी अनेक रचनाओं को 'आपका बंटी' उपन्यास और कहानियों को कई-कई बार पढ़ चुका हूँ। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के सन्दर्भ में एक बात कही गयी है- " Psycholoqical Novels are not two Read, but to re-

read'' अर्थात् 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक बार नहीं परंतु बारंबार पढ़ने की वस्तु है।' यही बात हम मन्नू भंडारी के कथासाहित्य के बारे में भी कह सकते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को हमने कुल सात अध्यायों में विभक्त किया है, जिनमें से प्रथम अध्याय 'विषय प्रवेश' का है। प्रस्तुत अध्याय में कथा साहित्य के तात्पर्य को स्पष्ट करते हुए उपन्यास और कहानी दोनों की परिभाषाओं पर एक विहंगम दृष्टिपात किया गया है। यह आवश्यक था कि हमारा शोध-प्रबंध मन्नू भंडारी जी के कथा साहित्य से संबद्ध है। कथा साहित्य के अन्तर्गत उपन्यास और कहानी दोनों का समावेश होता है। दोनों के तत्व भी कमोवेश रूप में समान-समान हैं। तथापि वस्तु एवं शिल्प दोनों दृष्टि से ये दोनों अलग-अलग विधा है। उपन्यास में जहाँ किसी के जीवन को समग्र रूप से या उसके जीवन के एक बहुत बड़े हिस्से को लिया जाता है, वहाँ कहानी में जीवन के किसी एक मार्मिक प्रसंग को उकेरा जाता है। इस प्रकार उपन्यास का फलक जहाँ व्यापक है कहानी का फलक थोड़ा सीमित है। इसीलिए कुछ आलोचक कहानी को जीवन का 'Snap Shot' कहते हैं।

इस तरह प्रस्तुत अध्याय में दोनों विधा के रूपगत अभिलक्षणों को स्पष्ट करते हुए उनके व्यावर्तक लक्षणों का अनुसंधान किया गया है। तदुपरांत हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत दोनों विधाओं के विकास को परिलक्षित करने का यत्न हमने किया है और इसी उपक्रम में प्रमुख उपन्यासकारों और कहानीकारों के योगदान को स्पष्ट किया है है। औपन्यासिक विकास को हमने मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया है-पूर्व प्रेमचंद काल, प्रेमचंद काल तथा प्रेमचंदोत्तर काल। पूर्वप्रेमचंद काल में हमने लाला श्रीनिवास दास, देवकीनंदन खत्री, गोपालराव गहमरी, किशोरीलाल गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, अयोध्यासिंह उपाध्याय, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह प्रभृति उपन्यासकारों के योगदान को स्पष्ट किया है।

जहाँ तक हिन्दी कथासाहित्य का संबंध है, प्रेमचंद का महत्व उसमें

अपरिहार्य है । उनका स्थान हिन्दी कथासाहित्य में मेरुदंड के समान है । हिन्दी के कई आलोचक- डॉ. इन्द्रनाथ मदान जैसे हिन्दी का वास्तविक प्रारंभ ही प्रेमचंद से मानते हैं, क्योंकि हिन्दी में मानवचरित्र की पहचान सर्वप्रथम प्रेमचंद में ही उपलब्ध होती है । प्रेमचंद ने समस्यामूलक सामाजिक उपन्यास दिये हैं । उनके उपन्यासों में 'वरदान, सेवासदन, निर्मला, गबन, प्रतिज्ञा, रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गोदान, कायाकल्प' आदि मुख्य हैं। 'मंगलसूत्र' उनका एक अपूर्ण उपन्यास है । 'गोदान' में हमें प्रेमचंद जी की औपन्यासिक कला का उत्तम शिखर उपलब्ध होता है । यह उपन्यास महाकाव्यात्मक चेतना (epic-Novel) लिए हुए है । फलतः हिन्दी के अनेक आलोचकों ने इस उपन्यास को कृषक जीवन का महाकाव्य कहा है । प्रेमचंद युग के अन्य उपन्यासकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', चतुरसेन शास्त्री, वृंदावनलाल वर्मा, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क, सियाराम शरण गुप्त, ऋषभचरण जैन, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि की परिगणना कर सकते हैं । प्रेमचंदोत्तर काल के उपन्यासकारों में यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, डॉ. रांगेय राघव, इलाचंद्र जोशी आदि के औपन्यासिक कृतित्व को बहुत संक्षेप में निर्दिष्ट किया गया है । प्रेमचंदोत्तर काल में ही कतिपय स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकारों के कृतित्व को भी रेखांकित किया गया है , जिनमें डॉ. विष्णु प्रभाकर, डॉ. देवराज, उदयशंकर भट्ट, फणीश्वरनाथ 'रेणु', डॉ. धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव, नागार्जुन, मन्नू भंडारी, मोहन राकेश, रमेश बक्षी, लक्ष्मी नारायण लाल आदि उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं ।

हिन्दी उपन्यास के विकास के उपरांत प्रस्तुत अध्याय में बहुत संक्षेप में हिन्दी कहानी के विकास को भी दृष्टिगत किया गया है । हिन्दी कहानी के प्रारंभिक विकास को बताते हुए इसमें जयशंकर प्रसाद, मुन्शी प्रेमचंद , पंडित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', पांडेय बेचेन शर्मा 'उग्र', जैनेन्द्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, यशपाल आदि कहानीकारों के योगदान को रेखांकित किया गया है । उसके उपरांत नयी कहानी, नयी कहानी

की उपलब्धियाँ, नयी कहानी की सीमाओं आदि को बताते हुए उसमें मन्नू भंडारी के स्थान को सुनिश्चित किया गया है। इसी अध्याय में कथासाहित्य और मानव समस्याओं के पारस्परिक संबंध को भी निरूपित किया गया है। चूँकि शोधप्रबंध का संबंध मन्नू भंडारी जी के कथासाहित्य से है। प्रस्तुत अध्याय में हमने मन्नू जी की कतिपय साहित्यिक अवधारणाओं को भी स्पष्ट किया है।

दूसरे अध्याय में हमने मन्नू जी के उपन्यासों तथा कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में मन्नूजी की पहचान बतानेवाला और उनको स्थापित करने वाला उपन्यास 'आपका बंटी' है। इसमें मन्नू जी ने तलाकशुदा दम्पती के बच्चों की दयनीय स्थिति का कारुणिक चित्रण अंकित किया है। 'आपका बंटी' से पूर्व हिन्दी उपन्यास में कृष्ण बलदेव कृत 'उसका बचपन' उपन्यास में बच्चे की अनाथ अवस्था को चित्रित किया है, परंतु प्रस्तुत उपन्यास में इस प्रकार के बच्चों की जो मानसिक स्थिति है उसका बड़ा ही सूक्ष्म, गहरा मनोविश्लेषणात्मक यथातथ्य चित्रण किया है। जो कदाचित हिन्दी साहित्य में प्रथम बार हुआ है। 'आपका बंटी' के उपरांत 'महाभोज' उनका एक राजनीतिक फलक पर लिखा गया उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक विसंगतियों को बेपर्द किया है। राजनीति किस प्रकार जीवन के तमाम मूल्यों को लील रही है इस तथ्य को मन्नू जी ने इसमें भली-भांति चित्रित किया है। 'एक इंच मुस्कान' मन्नू जी का राजेन्द्र यादव के सहलेखन में लिखा गया उपन्यास है। इसके उपरांत उनका एक लघु उपन्यास 'स्वामी' मिलता है। जिस पर एक हिन्दी फिल्म का निर्माण भी हुआ था। प्रस्तुत अध्याय में मन्नू जी के उपन्यासों का आलोचनात्मक विवेचन करने के उपरांत उनके कहानी साहित्य पर भी एक आलोचनात्मक दृष्टिक्षेप किया गया है। अद्यावधि मन्नू जी के पाँच कहानी संग्रह उपलब्ध होते हैं, 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु' आदि। बाद में ये तमाम कहानियाँ सन् २००२ में राधाकृष्ण प्रकाशन से 'नायक खलनायक विदूषक' ग्रंथ के अन्तर्गत संकलित की गयी है। इस तरह इस अध्याय में हमने

स्थापित किया है कि केवल दो-तीन उपन्यासों द्वारा ही मन्नू जी ने अपने औपन्यासिक का लोहा आलोचकों से मनवा लिया है। एक उपन्यासकार के रूप में इतनी सफल रही है कि उनके उपर्युक्त उपन्यासों का उल्लेख किये बिना हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास को पूर्णतया लक्षित नहीं किया जा सकता। मन्नू जी की कहानियों में भी हम यही बात देख सकते हैं। नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व को उन्होंने सहजता और सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में हमें पति-पत्नी के बनते बिगड़ते संबंध, खंडित दाम्पत्य जीवन तथा आधुनिक, विशेषतः नगरीय जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं और विडंबनाओं का बड़ा ही सशक्त चित्रण मिलता है।

हमारे शोध प्रबंध का विषय है-''मन्नू भंडारी के कथासाहित्य में मानव जीवन की समस्याओं का निरूपण : एक अनुशीलन''। फलतः इस शोध प्रबंध में हमने मन्नू जी के कथा साहित्य में निरूपित सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, राजनैतिक, धार्मिक तथा शैक्षिक समस्याओं को आकलित किया गया है। और प्रबंध के यथेष्ट समायोजन हेतु उन्हें अलग अलग अध्यायों में विभिक्त किया है। उसी उपक्रम में तृतीय अध्याय के अन्तर्ग हमने मन्नूजी के कथा साहित्य में आकलित सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं को लिया है। इन समस्याओं को निरूपित करते समय हमारे ध्यान में उनका समग्र कथा साहित्य रहा है। इस अध्याय के अन्तर्गत हमने दाम्पत्य जीवन में विघटन, सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों में टूटन, हमारे समाज व्यवस्था में पुरुष प्रधानता की समस्या, पुराने एवं आधुनिक संदर्भों के बीच पिसती हुई नारी, अनमेल विवाह की समस्या, तलाक की समस्या, नैतिक मूल्यों की समस्या तथा समाज में अब भी परिव्याप्त अस्पृश्यता की समस्या आदि समस्याओं को समाकलित किया गया है। यहाँ पर नारी विषयक विविध सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं के निरूपण में विशेषतया पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारियों तथा मातृत्व सुख से वंचित नारियों की समस्या को भी निरूपित किया है। सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत सामाजिक अन्यायों, अमानवीय शोषण की समस्या को

रेखांकित करते हुए पति-प्रेम वंचिता नारियों की विडंबनाओं को भी रेखांकित किया गया है। यहाँ बहुत तटस्थता के साथ मन्नू जी ने भारतीय नारियों का सम्मुख जो भय स्थान है उनको भी कलात्मक निरपेक्षता के साथ दृष्टिगत किया गया है। पश्चिमीकरण की गलत नकल के कारण भारतीय समाज में जिन विडंबना पूर्ण स्थितियों का जन्म हुआ है, लेखिका उससे भी पूर्ण रूप से वाकेफ है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मन्नू जी अपने समाज के प्रति एक प्रतिबद्ध लेखिका हैं और समाज के दुःख दर्दों और उसके समस्याओं के आकलन में कहीं भी वे पीछे नहीं रही है। इस दृष्टि से उनकी गणना या तुलना प्रेमचंद स्कूल के सामाजिक प्रतिबद्ध लेखकों के श्रेणी में किया जा सकता है।

यद्यपि आधुनिक काल के अन्तर्गत प्रेमचंद युग में ही जैनेन्द्र द्वारा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सूत्रपात हो गया था, तथापि उसका पूर्णरूपेण विकास तो प्रेमचंदोत्तर और स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ। मन्नू भंडारी का काथासाहित्य स्वातंत्र्योत्तर काल में पड़ता है और कुछेक आलोचकों के मतानुसार उनकी गणना मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों और कहानीकारों के अन्तर्गत होती है, परिणाम स्वरूप उनके कथासाहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निरूपण स्वाभाविक ही कहा जायेगा। फलतः चतुर्थ अध्याय में हमने मन्नूजी के कथासाहित्य में उपलब्ध मनोवैज्ञानिक समस्याओं का आकलन किया है। अध्याय के प्रारंभ में साहित्य और मनोविज्ञान के संबंध को स्थापित किया गया है। उसके पश्चात् कुछ मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की चर्चा करते हुए नाना प्रकार की मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों और विकृतियों को निर्दिष्ट करते हुए अचेतनमन, इच्छाओं के दमन से उत्पन्न समस्याएँ, अन्तःक्षेपन, प्रक्षेपण और विस्थापन की समस्याओं को निरूपित किया गया है। इसी अध्याय में मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का मानवजीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका मन्नूजी के कथासाहित्य के साक्ष्य पर निर्धारित किया गया है। यहाँ पर पलायनवादी वृत्ति, समायोजन की समस्या, आधुनिकताबोध और उससे उत्पन्न समस्याओं का आकलन मन्नूजी के कथासाहित्य के संबंध में किया गया है। यहाँ हमने रेखांकित किया है कि मन्नू

जी के कथा साहित्य में मनः स्नायुगत विकृतियों से उत्पन्न क्षोभोन्माद, दुर्भिती, मनःश्रान्ती, इत्यादि मनोवैज्ञानिक समस्याएँ प्रभृति मात्रा में पायी जाती है। उनके कथा साहित्य में लैंगिक विपर्यास से संबद्ध विकृतियाँ जैसे पर परपीडन, स्वपीडन आदि उपलब्ध होती है। उनके कथा साहित्य में मनुष्य के अहं (Ego) संबंधित समस्याएँ भी प्रभूत मात्रा में मिलती हैं। इन समस्याओं में तादात्मीकरण प्रक्षेपण, विस्थापन, क्षतिपूर्ती, प्रतिगमन, स्वैर कल्पना, वास्तविकता का अस्वीकरण आदि को परिगणित कर सकते हैं। इसके उपरांत इसके साहित्य में इडिपस ग्रंथी, इद ओर ईगो का संघर्ष तथा सुपर ईगो से संबद्ध समस्याएँ भी पायी जाती हैं। अभिप्राय यह है कि आधुनिक जीवन में पायी जानेवाली लगभग तमाम प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का आकलन मन्नू जी के कथासाहित्य में हुआ है।

मानव जीवन की समस्याएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं। सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का उत्स कई बार हमें आर्थिक समस्याओं के रूप में मिलता है। बल्कि यदि कहा जाय कि मानवजीवन की अधिकांश समस्याओं का मूल आर्थिक समस्याओं में है तो उसे अतियुक्ति न कहा जायेगा। आधुनिक जीवन में तो अर्थसत्ता ने एक प्रकार से मानवजीवन पर कब्जा जमा दिया है। समाज में कोई भी व्यक्ति आर्थिक समस्याओं से परे नहीं मिल सकता। परिणाम स्वरूप पंचम अध्याय में हमने मन्नू जी के कथा साहित्य में जिन आर्थिक समस्याओं को आकलित किया गया है उनकी चर्चा को अपनी चर्चा का आधार बनाया है। इसमें बेकारी की समस्या, आवास की समस्या, भाई-भतीजावाद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, आर्थिक अभाव के कारण युवकों में फैलती पलायन वृत्ति की समस्या, आर्थिक रूप से निर्भर हो रही नारी की समस्या, नौकरी पेशा महिलाओं की समस्या, अर्थाभाव के कारण मृत्यु का वरण करनेवाला मजबूर कृषकों की समस्या, आर्थिक विषमता के कारण पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में पड़ने वाली दरारों की समस्या आदि समस्याओं का मन्नू जी के कथासाहित्य के सन्दर्भ में अनुसंधानपरक दृष्टि से किया गया है। मन्नू भंडारी जी के कथासाहित्य को देखते हुए कहा जा सकता है कि उनका अर्थ

विषयक आकलन सूक्ष्म एवं गहरा है। उन्होंने समाज की आर्थिक समस्याओं को उसके यथार्थ स्वरूप में प्रस्तुत किया है। जिससे इस बात की प्रतीति हुए बिना नहीं रहती कि उनका स्वभाव विषय अध्ययन एवं निरीक्षण उनकी पैनी सामाजिक दृष्टि का परिणाम है।

हमारे शोधप्रबंध का विषय मन्नू जी के कथा साहित्य में मानवजीवन के समस्याओं के निरूपण से सम्बद्ध है , फलतः छट्ठे अध्याय में हमने मन्नू जी के कथासाहित्य में जो राजनीतिक, धार्मिक एवं शैक्षिक समस्याएँ उपलब्ध होती हैं उनका शोधपरक आकलन किया है। इन समस्याओं में मुख्यतया भ्रष्ट राजनीति, समाज के तमाम क्षेत्रों का राजनीतिकरण, अपराधीकरण, राजनीति में नैतिक मूल्यों का अधःपतन, पुलिस का राजनीतिकरण, न्याय व्यवस्था का राजनीतिकरण जैसी समस्याओं को सोदाहरण प्रस्तुत किया है। धार्मिक समस्याओं के अन्तर्गत धर्म का राजनीतिकरण, धर्म का अर्थसत्ताओं से ध्रुवीकरण, छद्म धर्म के कारण छद्म धर्म से उत्पन्न मानवता विरोधी समस्याएँ जैसी समस्याओं को उठाया गया है और उनका आकलन मन्नू जी के कथासाहित्य के सन्दर्भ में किया गया है। शैक्षिक समस्याओं के अन्र्गत शैक्षिक मूल्यों की गिरावट्, शिक्षित समाज का राजनीतिकरण और उसके द्वारा शिक्षण जगत में पायी जानेवाली विसंगतियों और विडंबनाओं को रेखांकित किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत हमने उक्त समस्याओं के अतिरिक्त कुछ अन्य समस्याओं को भी लिया है। जिनमें महानगरों में पायी जानेवाली प्रदूषण की समस्या को विशेष रूप से उकेरा है। महानगरों में केवल वायु प्रदूषण ही नहीं किन्तु जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और वैज्ञानिक प्रदूषण भी मिलता है। जिनकी चर्चा यहाँ मन्नू जी के कथा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में की गई है।

यथासंभव हमने शोध प्रविधि के सिद्धांता का पालन किया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में समग्रावलोकन की प्रक्रिया के द्वारा निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में सन्दर्भानुक्रम को भी यथासंभव वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने की हमारी चेष्टा रही है। शोध प्रबंध के अंत में हमने सन्दर्भिका

(Bibligraphy) को भी यथासंभव वैज्ञानिक ढंग से अकारादि क्रम में रखने का प्रयास किया है। यहाँ हमने उपजीव्य ग्रंथों के अतिरिक्त हिन्दी और अंग्रेजी के सहायक ग्रंथों की एक सूची प्रस्तुत की है। साथ-साथ हमने उन ग्रंथों का उल्लेख भी किया है जिनका प्रत्यक्षतः कहीं सन्दर्भ न होते हुए भी परोक्ष और प्रकारान्तर ढंग से प्रबंध की मानसिकता से किसी न किसी तरह से संबद्ध रहे हैं।

मन्नू भंडारी हिन्दी के आधुनिक कथासाहित्य में अग्रिम कथाकारों में बिराजमान हैं। अतः उनके कथासाहित्य को लेकर विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधपरक कार्य हो रहे हैं। यहाँ हमने मन्नू जी के कथासाहित्य का अध्ययन एवं अनुशीलन मानवजीवन की समस्याओं के सन्दर्भ में किया है। अतः साहित्य के अतिरिक्त उसका संबंध समाज शास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र जैसे विषयों से भी रहा है। आजकल साहित्यिक अनुशीलन अन्य-अन्य विद्याशाखाओं (Disciplines) के सन्दर्भ में हो रहा है। हमारा शोधकार्य भी उसी श्रृंखला की एक कड़ी है।

मन्नू जी अभी जीवित हैं अतः अपने शोध प्रबंध में परिशिष्ट : १ के अन्तर्गत मैंने उनके साथ हुए मेरे साक्षात्कार को भी लिपिबद्ध किया है। मैंने मन्नू जी के कथा साहित्य का अध्ययन मानवजीवन की समस्याओं के सन्दर्भ में किया है, उनके किसी दूसरे पक्ष को लेकर भी भविष्य में शोधकार्य हो सकता है। कोई चाहे तो उनके समग्र साहित्य को लेकर भी शोधकार्य कर सकता है। मन्नू जी के विचार एवं साहित्यिक विषय के अवधारणाएँ यत्र-तत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही है। उन अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में भी मन्नू जी के साहित्य पर शोधकार्य हो सकता है। किसी भी साहित्यकार के जीवन का उसकी रचनाओं पर किसी न किसी प्रकार से प्रभाव तो पड़ता ही है। अतः मन्नू जी के जीवन संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में उनके साहित्य का अनुशीलन भी किया जा सकता है।

अंततः प्रबंध विद्वतजनों के सम्मुख है। मैं अपनी सीमा शक्ति से भली-भाँति अभिज्ञ हूँ। अतः त्रुटियों के लिए पहले से ही क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरा यह

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

शोधकार्य इस विषय के अध्येताओं और अनुसंधित्स्यों को यदि तनिक भी उपयोगी हुआ तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा।

अंततः तेलुगू भाषा के महाकवि शैषेन्द्र की निम्नलिखित पंक्तियों के साथ विरम रहा हूँ-

"शाम के वक्त थोड़ा-सा गीत
थोड़ा-सा अँधेरा, थोड़ा-सा मधु
थोड़ी-सी प्रतीक्षा
और चाहिए दो-तीन नक्षत्र तब
तब ज्ञात होता है, जल प्रपात नहीं है
जल का अधःपतन
और आँसू नहीं है दुःख का संकेत।"

पुनः पुनः सबको आभार सहित -

*